किताबें मिलीं

मनोज मोहन

मुकुल शर्मा की किताब *दलित और प्रकृति : जाति और पर्यावरण आंदोलन* पर्यावरण अध्ययन में जाति, सत्ता, ब्राह्मणवाद और दलित स्वर के जटिल अंतर्संबंधों की पड़ताल करती है। लेखक का कहना है कि ऐतिहासिक तौर पर दलितों का बौद्धिक चिंतन भारतीय राजनीति और नागरिक अधिकारों के लिए हमेशा संघर्ष करता आया है। लेकिन, पर्यावरण के साथ उसके रिश्ते को संशय भरी नज़रों के साथ देखा जाता रहा है। यह पुस्तक इस विसंगति को दूर करने का प्रयास करती है। पुस्तक में उत्तरी भारत के हिंदू-जीवन में दलितों की भूमिका और योगदान के सघन चित्रण के साथ आगे की सम्भावनाओं पर भी विचार किया गया है।

दलित और प्रकृति : जाति और पर्यावरण आंदोलन
मुकुल शर्मा
वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य : 350 रु., पृष्ठ : 336

प्रयाग शुक्ल की ख्याति कला-चिंतक, कवि और सम्पादक की रही है। वे लम्बे समय तक राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की पत्रिका *रंग-प्रसंग* और संगीत नाटक अकादेमी की पत्रिका *संगना* के सम्पादक रहे हैं। रवींद्रनाथ से लेकर उपेंद्र महारथी के चित्रों को देखते हुए उन्होंने जो लिखा है, उससे आधुनिक भारतीय चित्रकला के इतिहास से पाठक का परिचय गाढ़ा होता है। उन्होंने *कल्पना* और *दिनमान* जैसी महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं में कला-जगत पर अनगिनत रिपोर्ट और समीक्षात्मक लेख लिखे थे। अभिषेक कश्यप ने प्रयाग शुक्ल के इसी अवदान को *कला की दुनिया में* जिल्दबंद किया है। किताब में शामिल लेखों-टिप्पणियों को आठ खण्डों में रखा गया है— अवदान, परख, मूल्यांकन, संवाद, विमर्श, पश्चिमी कला और कलाकार, स्मरण और विविधा। कला के रसिकों और अध्येताओं के लिए यह एक महत्त्वपूर्ण किताब है।

कला की दुनिया में
प्रयाग शुक्ल (सं. अभिषेक कश्यप)
अनन्य प्रकाशन, दिल्ली
मूल्य : 600 रु., पृष्ठ : 630
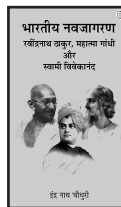
इंद्रनाथ चौधुरी ने अपनी किताब भारतीय नवजागरण में *रवींद्रनाथ ठाकुर, महात्मा गाँधी और विवेकानंद* के सांस्कृतिक-सामाजिक अवदान का विवेचन-विश्लेषण कर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि नवजागरण के देशज स्रोतों और आधुनिकता संबंधी मान्यताओं को लेकर इन तीनों विभूतियों के विचारों में एक अंतर्सूत्रता है। वे नवजागरण की परिघटना को भारतीय सांस्कृतिक इतिहास की प्राचीन अंतर्धारा के रूप में देखते हैं, और सांस्कृतिक इतिहास की अंतर्धारा के उन मोड़ों को चिह्नित करते हैं जब जन समाज बौद्धिक-सांस्कृतिक उन्मेष में व्यापक स्तर पर सक्रिय भागीदारी करता था। यह किताब भारतीय नवजागरण के मौलिक स्वरूप की ओर ध्यान खींचने का प्रयास करती है।

भारतीय नवजागरण : रवींद्रनाथ ठाकुर, महात्मा गाँधी और स्वामी विवेकानंद
इंद्रनाथ चौधुरी
सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य : 400 रु., पृष्ठ : 216

प्रसिद्ध इतिहासकार और समाज-चिंतक सुधीर चंद्र ने मशहूर चित्रकार भूपेन खख्खर की जीवनी *भूपेन खख्खर : एक अंतरंग संस्मरण* शीर्षक से लिखी है। अतरंगता का सामंजस्य दो भिन्न क्षेत्रों की हस्तियों के बीच

कैसे सम्भव है, यह किताब उसका भी एक दस्तावेज़ है। पुस्तक इस लिहाज़ से भी उल्लेखनीय है कि एक इतिहासकार द्वारा इस मूर्धन्य और अनोखे चित्रकार पर मूलत: हिंदी में लिखी गयी पहली जीवनी है। सुधीर चंद्र ने समलैंगिक भूपेन खख्खर के अकेलेपन के व्यापक सांस्कृतिक आयाम को अपनी संवेदना, समझ और सतही वस्तुनिष्ठ ढंग से नहीं बल्कि गहरे लगाव से लिखा है।

भूपेन खख्खर : एक अंतरंग संस्मरण
सुधीर चंद्र
रज़ा फ़ाउण्डेशन+राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य : 999 रु., पृष्ठ : 286.

फारवर्ड प्रेस और सेज द्वारा संयुक्त रूप से प्रकाशित *बिहार की चुनावी राजनीति : जाति-वर्ग का समीकरण* बिहार की राजनीति में जातिगत वर्चस्व की पड़ताल करती है। यह पुस्तक 1947 से 1990 की अवधि का विश्लेषणपरक अध्ययन करते हुए राज्य में मण्डल आंदोलन के बाद की राजनीति के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालती है। इस क्रम में राज्य की खण्डित, जाति-विभाजित और धर्म से निर्देशित राजनीति के कारणों की तलाश करते हुए उसके सामाजिक-आर्थिक इतिहास पर विचार किया गया है। पुस्तक एक अन्य उल्लेखनीय पहलू यह भी है कि वह राज्य के विकास और वृद्धि जैसे प्रश्नों को सम्बोधित करते हुए अभिशासन तथा नेतृत्व के नज़रिये का प्रयोग करती है।

बिहार की चुनावी राजनीति : जाति-वर्ग का समीकरण
संजय कुमार
फारवर्ड प्रेस और सेज, नयी दिल्ली
मूल्य : 350 रु., पृष्ठ : 384

शेखर पाठक की किताब *हरी भरी उम्मीद* बीसवीं सदी के चर्चित चिपको आंदोलन का गहरा और विस्तृत अध्ययन-विश्लेषण प्रस्तुत करती है। जलवायु परिवर्तन के दौर में यह पुस्तक जंगलों की वैश्विक महत्ता को समझने में भी सहायक है। कुल मिलाकर किताब में चौदह अध्याय हैं जिनमें वन-संरक्षण आंदोलनों के भूगोल के विस्तृत परिचय के साथ चिपको आंदोलन के चार दशकों का सम्पूर्ण लेखाजोखा दिया गया है। इस आंदोलन के क्रमिक विकास को समझने में प्रस्तुत छवियाँ और संदर्भ सामग्री के साथ अनुक्रमणिका की मौजूदगी समाज-विज्ञान और इतिहास-अध्ययन के लिए भी उपयोगी सामग्री उपलब्ध कराती है।

हरी भरी उम्मीद : चिपको आंदोलन और अन्य जंगलात प्रतिरोधों की परम्परा
शेखर पाठक
वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य : 595 रु., पृष्ठ : 601

चे गेवारा को शताब्दी की विभूतियों में शामिल किया जाता है। वी.के. सिंह की किताब इस अंतर्राष्ट्रीय क्रांतिकारी के जीवन का विशद् पाठ प्रस्तुत करती है। इस किताब में सात अध्याय हैं। पहले अध्याय में बचपन के दिनों और अर्जेंटीना के सामाजिक-राजनीतिक परिवेश का ज़िक्र है। दूसरे में उनकी यात्राओं का वर्णन है, तो तीसरे में मार्क्सवादी साहित्य के अध्ययन और डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी करने के बाद क्यूबा पहुँचने की कथा है। चौथे अध्याय में क्यूबा क्रांति की दास्तान है। पाँचवाँ अध्याय चे की अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों पर केंद्रित है। बाद के अध्यायों में चे की शहादत, बोलीविया अभियान की कहानी और उनके उत्तर-जीवन के प्रभाव का विश्लेषण है। जीवनीकार का कहना है कि चे को किसी महामानव या मसीहा के नज़रिये से नहीं देखा जाना चाहिए।

चे गेवारा : एक जीवनी
वी.के. सिंह
राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य : 995 रु., पृष्ठ : 486.

सबा नक़वी देश की जानी-मानी पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक हैं। भगवा का *राजनीतिक पक्ष : वाजपेयी से मोदी तक* उनकी अंग्रेज़ी किताब *शेड्स ऑफ़ सैफ़रॅन : फ़्रॉम वाजपेयी टू मोदी* का अनुवाद है। वाजपेयी और मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में उपस्थित रहीं सबा ने भाजपा के उभार से लेकर

उसके सत्ता तक पहुँचने की यात्रा को निकट से देखा है। 'वाजपेयी के नाम वह सहर' से लेकर 'भाजपा आईएनसी (निगमित)' तक के चौंतीस उप-शीर्षकों में विभाजित यह किताब भाजपा की विकास-यात्रा का भी विश्लेषण करती है। इस यात्रा में वे संघ की कार्यकर्ता-पंक्ति की भूमिका, निर्वाचित नेताओं के साथ बनते-बिगड़ते समीकरणों, सामाजिक विस्तार की कोशिश में राजनीतिक-आर्थिक मोर्चे पर बदलते पैंतरों का तफ़सील से वर्णन करती हैं। यह किताब पिछले दो दशकों की राजनीति को समझने के लिए कई आवश्यक संदर्भ उपलब्ध कराती है।

भगवा का राजनीतिक पक्ष : वाजपेयी से मोदी तक
सबा नक़वी
वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य : 599 रु., पृष्ठ : 264

प्रज्ञा पाठक द्वारा अज्ञात और अल्पज्ञात स्त्री-लेखन की खोज का नतीजा है उमा नेहरू और स्त्री-अधिकारों पर उनकी किताब। बीसवीं सदी के शुरुआती दशकों के दौरान स्वतंत्रता आंदोलन के समानांतर सामाजिक स्तर पर आत्ममंथन की प्रक्रिया चल रही थी। उसी प्रक्रिया के बड़े हिस्से के रूप में स्त्री-स्वातंत्र्य की चेतना को उमा नेहरू अपनी युगीन समस्याओं को संबोधित करते हुए दर्ज कर रही थीं। वे स्त्री की कमज़ोर स्थिति के लिए उनकी आर्थिक पराधीनता को मुख्य कारण मानती थीं। उन्होंने उसी समय इस सच्चाई को समझ लिया था कि पुरुष नारीवादियों द्वारा पाश्चात्य स्त्री-छवि के संदर्भ में किये गये विमर्श की सीमाएँ क्या हैं, और साथ ही वे किंतु-परंतु वाले नारी-विमर्श की सीमाओं को भी जान गयी थीं। प्रज्ञा ने तत्कालीन पत्रिकाओं में बिखरे उमा नेहरू के लेखों और सम्पादकीय टिप्पणियों के साथ संसद में दिये गये भाषणों को अपनी कृति में जगह दी है।

उमा नेहरू और स्त्रियों के अधिकार
सं : प्रज्ञा पाठक
राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
मूल्य : 695 रु., पृष्ठ : 248

विख्यात साहित्यशास्त्री शंभुनाथ के प्रधान सम्पादन में *हिंदी साहित्य ज्ञानकोश* के सात खण्डों में साहित्य के विद्यार्थी ही नहीं बल्कि धर्म, संस्कृति, समाज विज्ञान, मीडिया, कला-साहित्य, पर्यावरण आदि विषयों के पाठकों और जिज्ञासुओं के लिए भी पर्याप्त जानकारी है। इस ज्ञानकोश की प्रविष्टियों को 275 विद्वानों ने लिखा है। प्रविष्टियों के चयन में विभिन्न भारतीय राज्यों, राष्ट्रीय भाषाओं और स्थानीयताओं का विशेष ध्यान रखा गया है। हिंदी साहित्य और संस्कृति को विस्तार देते हुए वैश्वीकरण, नयी अर्थव्यवस्था और उपभोक्ता संस्कृति से संबंधित प्रविष्टियाँ भी इनमें शामिल हैं। प्रविष्टि सूची को अकारादि क्रम के साथ-साथ विषयों के क्रम में भी रखा गया है। यह कोश हिंदी भाषा और चिंतन के बढ़ते परिसर में अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज करता है।

हिंदी साहित्य ज्ञानकोश (सात खण्ड)
प्रधान सम्पादक : शंभुनाथ
भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता
मूल्य : 5000 रु.,(सेट), पृष्ठ : 4590
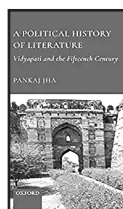
पंकज झा अपनी रचना *अ पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ़ लिटरेचर : विद्यापति ऐंड द फिफ्टींथ सेंचुरी* में कहते हैं कि तेरहवीं सदी में पश्चिम एशिया से मुसलमानों के आगमन के साथ ही उत्तर भारत में बहुभाषी समाज को एक नया आयाम मिला। कुछ ही समय में यह बहुभाषिकता रचनात्मक और अकादमिक दुनिया में दिखने लगी। उसी तत्कालीन समाज में मिथिला क्षेत्र के कवि और विद्वान विद्यापति एक हस्ती के रूप में उभरे। लेखक ने विद्यापति के तीन ग्रंथों *लिखनावली, कीर्तिलता* और पौराणिक ऐतिहासिक कहानियों के संग्रह *पुरुषपरीक्षा* को उनके वैचारिक विस्तार, विद्वत्ता, साहित्यिक मूल्य, सदाशयता और ऐतिहासिक चेतना को तत्कालीन राजनीतिक और सांस्कृतिक परम्पराओं में रख कर देखा है।

अ पॉलिटिकल हिस्ट्री ऑफ़ लिटरेचर : विद्यापति ऐंड द फिफ़्टींथ सेंचुरी
पंकज झा
ऑक्सफ़र्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली
मूल्य : 1095 रु., पृष्ठ : 272